P-999

Total Pages : 5 Roll No. .....

MASL-202

गद्य एवं पद्य काव्य

MA Sanskrit (MASL)

2nd Year Examination, 2023 (June)

Time : 2 Hours] **Max. Marks : 70**

नोट : यह प्रश्नपत्र सत्तर (70) अंकों का है जो दो (02) खण्डों क तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।

(खण्ड-क)

(दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (2×19=38)

1. निम्नलिखित श्लोकों में से किन्हीं दो की ससन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

(क) अम्भो बिन्दुग्रहणचतुरांश्चातकान् वीक्षमाणाः।
श्रेणीभूताः परिगणनया निर्दिशन्तो बलाकाः।
त्वामासाद्य स्तनितसमये मानयिष्यन्ति सिद्धाः
सोत्कम्पानि प्रियसहचरीसंभ्रमालिगितानि।।

(ख) पत्रश्यामा दिनकरहयस्पर्धिनो यत्र वाहाः
शैलोदग्रास्त्वमिव करिणो दृष्टिमन्तः प्रभेदात्।
योधाग्रण्यः प्रतिदशमुखं संयुगे तस्थिवांसः
प्रत्यादिष्टाभरणरूचयष्चन्द्रहांसव्रणाङ् कैः।।

(ग) कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमन्तः
शापेनास्तंङ्मितमहिमा बर्षभोग्येण भर्तुः।
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छायातरूषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु।।

(घ) धूमज्योतिः सलिलमरूतां सन्निपातः क्व मेघः
सन्देशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।
इत्यौत्सुक्याद परिगणयन्गु हृदकस्तं ययाचे
कामाता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतना चेतनेषु।।

2. निम्नांकित गद्यांश में से किसी एक की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

(क) तदाकण्य विविध-भाव-भङ्ग-भासुर वदनो योगिराजों मुनिराजं तत्सहचराँश्च निपुणं निरीक्ष्य तेपामपि शिववीरान्तरङ्गतामङ्गीकृत्य, मुनिवेषव्याजेन स्वधर्मरक्षाव्रतिनश्चोररीकृत्य "विजयतां शिववीरः सिद्धयन्तु भवतां मनोरथाः" इति मन्दं व्याहार्षीत्।

(ख) अथ "कन्यके। मा भैषीः पुत्रि! त्वाम् मातुः, समीपे प्रापयिषामः, दुहितः! खेदं मा वह, भगवति! भुङ्क्ष्व किञ्चित्, पिब पयः, एते तव भ्रातरः, यत् कथयिष्यसि तदेव करिष्यामः, मा स्म रोदनैः प्राणान् संशयपदवीमारोपयः, मास्मकोमलमिदं शरीरं शोकज्वालालीढं कार्षीः" इति सहस्त्रधा बोधनेन कथमपि किञ्चिद् दुग्धं पीतवती। ततश्च मया क्रोडे उपवेश्य, "बालिके! कथय क्व ते पितरौ? कथमेतस्मिन्नश्रमप्रान्ते समायात? किं ते कष्टम्? कथमारोदीः कि वाच्छसि? किं कुर्मः?" इति पृष्टा मुग्धतया अपरिकलितवाक्पाटवा, भयेन-विशिथिलवचनविन्यासा, लज्जया अतिमन्दस्वरा, शोकेन रूद्धकण्ठा, चकितचकितेव कथं कथमपि अबोधयदस्मान् यद्-एषा अस्मिन्नेदीयस्येव ग्रामे वसतः कस्यापि ब्राह्मणस्य तनयाऽस्ति।

(ग) अरुण एष प्रकाशः पूर्वस्यां भगवतो मरीचिमालिनः। एष भगवान् मणिराकाशमण्डलस्य, चक्रवर्ती खोचर-चक्रस्य, कुण्डलमाखण्डलदिशः, दीपको ब्रह्माण्डभाण्डस्य, प्रेयान् पुण्डरीकपटलस्य, शोकविमोकः कोकलोकस्य, अवलम्बो रोलम्बकदम्बस्य, सूत्रधारः सर्वव्यवहारस्य, इनश्च दिनस्य। अयमेव अहोरात्रं जनयति, अयमेव वत्सरं द्वादशसु भागेषु विभनक्ति,

अयमेव कारणं षण्णामृतूनाम्, एष एवाङ्गीकरोति उत्तरं दक्षिणं चायनम्, एनेनैव सम्पादिता युगभेदाः, एनेनैव कृताः कल्पभेदाः, एनमेवाऽऽश्रित्य भवति परमेष्ठिनः परार्द्धसङ्ख्या, असावेव चर्कर्तिबर्भर्ति जर्हर्ति च जगत, वेदा एतस्यैव वन्दिनः गायत्री अमुमेव गायति, ब्रह्मनिष्ठा ब्राह्मणा अमुमेवाहरहरुपतिष्ठन्ते। धन्य एष कुलमूलं श्रीरामचन्द्रस्य प्रणम्य एष विश्वेषामिति उदेष्यन्तं प्रणमन् निजपर्णकुटीरात् निश्चक्राम कश्चित् गुरुसेवनपटुर्विप्रबटुः।

3. आधुनिक संस्कृत गद्य साहित्य के विकास में पण्डित अम्बिकादत्त व्यास के योगदान को रेखांकित कीजिए।

4. 'शिवराजविजय' के प्रथम निश्वास के आधार पर तात्कालिक सामाजिक व्यवस्था पर प्रकाश डालिए।

5. "उपमा कालिदासस्य" उक्ति की सप्रमाण व्याख्या कीजिए।

(खण्ड-ख)

(लघु उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (4×8=32)

1. पं. अम्बिकादत्त व्यास की गद्य शैली पर प्रकाश डालिए।

2. गीतिकाव्य की दृष्टि से मेघदूत की समीक्षा कीजिए।

3. शिवराजविजय के अनुसार भगवान सूर्य का वर्णन कीजिए।

4. मेघदूत के आधार पर कालिदास के काव्य-रचना-शैली का निरूपण कीजिए।

5. "विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत्" इस पद्य का सन्दर्भ सहित अनुवाद कीजिए।

6. "शिवराजविजय" उपन्यास के प्रथम विराम की विषयवस्तु पर प्रकाश डालिए।

7. "उपमा कालिदासस्य" उक्ति की सप्रमाण व्याख्या कीजिए।

8. न क्षुद्रो पि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय। प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः कि पुर्नयस्तथोच्चैः।। सूक्ति की व्याख्या कीजिए।